Chapter 9

Question: How can we be free from indignation?

प्रश्न : रोष से मुक्त होने का क्या तरीका है?

Krishnamurti: What do you mean by indignation? You mean when a man beats a heavily laden donkey, you feel angry? You say you feel righteously angry when some big man beats a little boy. Is there such a thing as righteous indignation?

कृष्णमूर्ति : रोष से आपका आशय क्या है? क्या आपका आशय यह है कि जब कोई आदमी भारी बोझ से लदे गधे को पीटता है तो उसे देखकर आपको गुस्सा आता है? आप कहते हैं कि जब कोई बड़ा आदमी किसी छोटे से बच्चे को पीटता है तो आपको गुस्सा आना उचित है। क्या उचित क्रोध जैसी कोई चीज़ वास्तव में होती है?

You asked a question, and I am not at all sure you are interested in finding out what it means. Most of us get angry for various reasons, and we try to find out after getting angry how to get over it. But what is important is to know the way of anger, how it comes into being and to stop it before the poisoning takes place. You understand what I am saying? How anger arises is our problem, not how to be free from anger, do you understand? I feel jealous because you have something which I have not got; your wife is more beautiful than mine, and I feel jealous; I struggle, then I feel most ugly to myself, I feel bitter with myself, and then I say, 'I must not be angry, I must conquer anger. How am I to do it?' As I do not know how to prevent it, how to prevent the arising of jealousy, how to put an end to the feeling before it arises, I go to some guru. But the problem is still there.

आपने प्रश्न तो पूछ लिया है पर मुझे संदेह है कि इसे जानने में आपकी सच में रुचि है। हममें से अधिकतर लोग भिन्न-भिन्न कारणों से क्रुद्ध हो जाते हैं और क्रुद्ध हो जाने के पश्चात हम यह खोजने का प्रयास करते हैं कि क्रोध को नियंत्रण में कैसे रखें। किंतु जो बात वास्तव में महत्त्वपूर्ण है वह है यह जानना कि क्रोध किस प्रकार से कार्य करता है, यह कैसे उत्पन्न होता है और इसका जहर फैले इससे पहले ही इसको कैसे रोका जाए। आप समझ रहे हैं न कि मैं क्या कह रहा हूं? हमारी समस्या यह नहीं है कि क्रोध से मुक्त कैसे हों, हमारी समस्या यह है कि क्रोध कैसे उत्पन्न होता है--क्या आप समझ रहे हैं? मुझमें ईर्ष्या की भावना इसलिए आती है क्योंकि आपके पास कोई ऐसी चीज़ है जो मेरे पास नहीं है, आपकी पत्नी मेरी पत्नी से अधिक सुंदर है और मुझे आपसे ईर्ष्या होने लगती है, तब मैं द्वंद्व में पड़ जाता हूं, अपने आपमें स्वयं को मैं सर्वाधिक कुरूप महसूस करने लगता हूं, अपने बारे में कटुता से भर जाता हूं और कहने लगता हूं, 'मुझे क्रोध नहीं करना चाहिए, मुझे क्रोध पर विजय पानी चाहिए। इसे जीतने के लिए मैं क्या करूं?' चूंकि मैं नहीं जानता कि इसे कैसे रोका जा सकता है, ईर्ष्या को उठने से कैसे रोका जाता है, इस भावना को जगने से पहले ही कैसे मिटाया जा सकता है, अतः मैं किसी गुरु के पास पहुंच जाता हूं। परंतु समस्या ज्यों-की-त्यों बनी रहती है।

Is it possible to understand how jealousy arises so that the feeling does not arise? You know, it is much better to eat the right food and be healthy rather than to eat wrong food, fall ill, and then go to the doctor. We eat wrong food all the

क्या यह समझना संभव है कि ईर्ष्या किस प्रकार से अस्तित्त्व में आती है ताकि यह भावना उत्पन्न ही न हो? आप जानते हैं कि गलत प्रकार का भोजन करने, फिर बीमार पड़ जाने और फिर डॉक्टर के पास जाने से बेहतर यही है कि सही भोजन लिया जाए। हम लगातार गलत ढंग का

time; then we take pills or go to the doctor. But if we took the right food, we would never need to go to the doctor.

भोजन करते रहते हैं फिर हम गोलियां खाते हैं या डॉक्टर के पास जाते हैं। किंतु यदि हम ठीक तरह का भोजन लेंगे तो हमें डॉक्टर के पास जाने की ज़रूरत ही नहीं होगी।

So what I am saying is: Let us find out how to eat right food, how to look at all this, so that these problems do not arise. Surely education is this, the prevention of the problem rather than finding a cure for it.

अतः मैं यह कह रहा हूं : हम यह जान लें कि सही प्रकार का भोजन कैसे लिया जाता है, इन सबको किस प्रकार से देखा जाता है ताकि ये समस्याएं पैदा ही न हों। निश्चित ही शिक्षा यही है, यानी समस्या का इलाज ढूंढ़ने के बजाय उसे उठने ही नहीं देना।

Question: Does constant suffering destroy man's sensitivity and intelligence?

प्रश्न : क्या क्लेशों को लगातार सहन करते रहने से मनुष्य की संवेदनशीलता और विवेक नष्ट होने लगते हैं?

Krishnamurti: What do you think? A mind that is constantly occupied with something, with puja, with following somebody, with a theory, with a philosophy, with its own sorrow, with its own beauty, with its own suffering, with its own failures and successes—surely such a mind becomes insensitive. You know, if your mind, if your attention, is fixed on something all the time, you have no occasion to look around. Can such a mind be sensitive?

कृष्णमूर्ति : आप क्या सोचते हैं? जो मन सतत किसी न किसी बहाने व्यस्त रहता है, पूजा में, किसी का अनुकरण करने में, अपने ही दुख में, अपनी ही सुंदरता में, अपने ही क्लेशों में, अपनी ही सफलताओं और असफलताओं में डूबा रहता है--ऐसा मन अवश्य ही असंवेदनशील हो जाता है। आप जानते हैं कि यदि आपका मन, आपका ध्यान किसी एक चीज़ पर सतत लगा रहे तो आपको किसी और बात का ख्याल करने का मौका ही नहीं मिलेगा। क्या इस तरह का मन संवेदनशील हो सकता है?

'To be sensitive' implies to be looking all around—seeing beauty, ugliness, death, sorrow, pain, joy. So, a mind that is suffering obviously becomes insensitive because suffering is its occupation; the mind uses suffering as a means for its own protection. My son dies, or my husband dies, and I am left alone; I have no companion, and I feel my life has been blotted out. So I keep on suffering, and my mind now is not concerned with freedom from suffering, but I make suffering into another means of my existence. You understand? The mind uses suffering as it uses joy to enrich itself because the mind thinks that without being occupied, it is poor, it is empty, dull.

संवेदनशील होने का तात्पर्य है कि अपने चारों ओर ध्यानपूर्वक देखा जा रहा है--सुंदरता को, कुरूपता को, मृत्यु को, दुख को, पीड़ा को, खुशी को। इसलिए यह तो स्पष्ट ही है कि क्लेशों से व्यथित रहने वाला मन असंवेदनशील हो जाता है क्योंकि व्यथा झेलते रहना इसकी आदत बन जाती है और मन व्यथा झेलते रहने को अपनी सुरक्षा के साधन के रूप में इस्तेमाल करने लगता है। किसी स्त्री के पुत्र या पति की मृत्यु हो जाती है और वह अकेली हो जाती है और उसे लगने लगता है जैसे जीवन अंधकारमय हो गया हो। अतः व्यथा को बनाए रखा जाता है और मन व्यथा से मुक्ति का विचार तक नहीं करता, बल्कि व्यथा को ही अपने अस्तित्व का सहारा बना लिया जाता है। आप समझ रहे हैं न? मन अपने आपको भरने के लिए व्यथा को वैसे ही काम में लाने लगता है जैसे वह खुशी को काम में लाता है, क्योंकि मन यह महसूस करने लगता है कि

This very occupation of the mind creates its own destruction. Sorrow is not a thing to be occupied with, any more than joy. The mind must understand why there is sorRow and not keep on merely being occupied with sorRow. The mind wants security, whether it is in suffering or in joy. So sorrow becomes the way of security. This is not a harsh thing I am saying, for if you think about it, if you look into it, you will see how the mind plays a trick on itself. It is only the unoccupied mind that is intelligent, that is sensitive.

कोई व्यस्तता न हो तो वह विपन्न है, रिक्त है, नीरस है। मन की ऐसी व्यस्तता ही उसके विनाश का कारण बन जाती है। खुशी की तरह दुख भी ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसमें रमा जाए। मन को यह समझना होगा कि दुख क्यों है और निरंतर दुख में ही लिप्त न रहे। मन सुरक्षा चाहता है फिर चाहे उसे यह व्यथा में मिले या खुशी में। इस प्रकार दुख सुरक्षा का साधन बन जाता है। मैं जो कह रहा हूं उसमें क्रूरता बिलकुल नहीं है क्योंकि यदि आप इस बारे में चिंतन करेंगे, इस पर सोच-विचार करेंगे तो आप देखेंगे कि मन कैसे स्वयं से ही छल करता है। अपनी उधेड़बुन से मुक्त मन ही प्रज्ञावान होता है, संवेदनशील होता है।

It is no use asking how the mind can be unoccupied. In the very 'how' the mind is playing a trick on itself.

मन का इस उधेड़बुन से कैसे छुटकारा हो यह पूछना ही फिजूल है। 'कैसे' का प्रश्न उठाना ही मन की अपने साथ छलावे की कोशिश है।

Question: How can one differentiate between memory which is essential and memory which is detrimental?

प्रश्न : कौन सी स्मृति आवश्यक और उपयोगी होती है और कौन सी अनावश्यक और हानिकारक, इसे कैसे समझा जाए?

Krishnamurti: The mind creates tradition, memory, through experience. Can the mind be free from storing up, though it is experiencing? You understand the difference? What is required is not the cultivation of memory but the freedom from the accumulative process of the mind.

कृष्णमूर्ति : मन अनुभव के द्वारा परंपरा और स्मृति को निर्मित करता है। क्या मन के लिए यह संभव है कि अनुभव को जारी रहने देते हुए भी संग्रह करने की प्रवृत्ति से वह मुक्त रहे? क्या आप इस अंतर को समझ रहे हैं? आवश्यकता इसकी नहीं है कि स्मृति को बढ़ाया कैसे जाए, बल्कि इस बात की है कि मन की संचय करते रहने वाली प्रक्रिया से कैसे मुक्त रहा जाए।

You hurt me, which is an experience, and I store up that hurt, and that becomes my tradition, and from that tradition I look at you;s I react. That is the everyday process of my mind and your mind. Now, is it possible that, though you hurt me, the accumulative process does not take place? The two processes are entirely different.

मान लीजिए आपने मुझे ठेस लगाई जो कि एक अनुभव है, मैं उस ठेस को याद रखता हूं और वह मेरी परंपरा बन जाती है और फिर मैं भी परंपरा के माध्यम से आपको देखता हूं, उसी के अनुसार प्रतिक्रिया करता हूं। यही मेरे व आपके मन की प्रतिदिन चलने वाली प्रक्रिया है। अब, क्या यह संभव है कि भले ही आपने मुझे ठेस लगाई फिर भी मन की संचय करने वाली प्रक्रिया शुरू ही न हो? वे दोनों प्रक्रियाएं एक दूसरे से नितान्त भिन्न हैं।

If you say harsh words to me, it hurts me, but if that hurt is not given importance, it does not become the background from which I act, so it is

यदि आप मुझे कठोर शब्द कहते हैं तो मुझे आघात पहुंचता है परंतु यदि उस आघात लगने को महत्त्व न दिया जाए तो वह मेरे बर्ताव की पृष्ठभूमि नहीं बनता और इसलिए मेरी आपसे

possible to meet you afresh. That is real education, in the deep sense of the word. Because, then, though I see the conditioning effects of experience, the mind is not conditioned.

मुलाकात में एक ताज़गी बनी रहती है। गहरे अर्थों में यही सच्ची शिक्षा है। क्योंकि उस स्थिति में, हालांकि मैं अनुभव के संस्कारजनक प्रभावों को देखता तो हूं, किंतु मन उनसे संस्कारित होने से बच जाता है।

Question: But why does the mind accumulate?

प्रश्न : परंतु मन संचय करता ही क्यों है?

Krishnamurti: Why do you think it accumulates? Listen to this carefully. Do you know the answer? Are you waiting for me to answer so that you can say yes? If you do not wait for an answer from me, then asking yourself that very question, 'Why does the mind accumulate?' brings about a creativity in you. You have asked it because you do not know the answer. But if you are actually confronted with the problem, your mind becomes alert and has to find an answer. The asking of that question, therefore, awakens, releases your own initiative, your creativity, the capacity to discover, to have a totally different outlook.

कृष्णमूर्ति : आप क्या सोचते हैं इस बारे में--यह संचय क्यों करता है? ज़रा इस ओर ध्यान दीजिए। क्या आपको इसका उत्तर मालूम है? क्या आप मेरे उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि आप उसमें 'हां' मिला सकें? यदि आप मेरे उत्तर की प्रतीक्षा न करें और खुद से पूछें कि 'मन संचय क्यों करता है?' तो इस प्रश्न को पूछना ही आपके भीतर सृजनशीलता लाता है। आपने इसे इसलिए पूछा है क्योंकि आप इसका उत्तर नहीं जानते हैं। किंतु यदि आप समस्या का सचमुच, प्रत्यक्ष रूप से सामना करें तो आपका मन सतर्क हो जाएगा और उसका उत्तर ढूंढ़ निकालेगा। इसलिए उस प्रश्न का पूछा जाना ही आपकी स्वतःप्रेरणा को जाग्रत कर देता है, आपकी उमंग को, आपकी सृजनशीलता को, खोज की आपकी क्षमता को स्फूर्ति से भर देता है, आपमें एक नितांत भिन्न दृष्टि जगाता है।

The problem is: Why does the mind accumulate? Please look at the problem. Probably some religious book or some teacher or some psychologist has told you why the mind accumulates. Whether it has been said by Ramanuja or by Shankara or by Jesus, it is what other people have said, it is not your own discovery. Do you understand? You have to discover. For you to discover, what other people have said must be put aside, must it not? So, you have to put aside all that you have been told about it, all that you have read about it. Then, you can find out why the mind accumulates.

समस्या है : मन संचय क्यों करता है? कृपया समस्या पर गौर करें। शायद किसी धार्मिक ग्रंथ ने, किसी शिक्षक ने या किसी मनोवैज्ञानिक ने आपको बतलाया हो कि मन संचय क्यों करता है। इसे चाहे रामानुज ने, शंकर ने या जीसस ने कहा हो, पर कहा किसी दूसरे के द्वारा ही गया है, यह आपकी अपनी खोज नहीं है। आप समझ रहें हैं? इसकी खोज तो आपको ही करनी है। आप खोज कर सकें इसके लिए यह ज़रूरी है कि अन्य लोगों ने क्या कहा है उसे दरकिनार कर दें--क्या नहीं? अतः इस बारे में आपको जो कुछ बताया गया है उसे एक ओर रख दें, इस बारे में आपने जो भी पढ़ा है उसे बीच में न आने दें। तब आप यह पता लगा सकेंगे कि मन संचय क्यों करता है।

To begin very simply, why do you accumulate clothes? For

आइए बिलकुल साधारण स्तर से बात शुरू करते हैं : आप कपड़ों का संचय क्यों करते हैं? सुविधा

convenience, is it not? Apart from the necessity, which is convenience, you also feel the gratification that goes with having many clothes, the feeling that you have a cupboard full of clothes, the feeling from which you get a sense of wellbeing, a sense of security. First there is a necessity, which is convenience; from convenience it becomes a psychological elation, and from that feeling, the cupboard of clothes gives you the sense of 'I have got something, I am somebody.' The cupboard is your security. So, the mind gathers knowledge, information, reads a great deal, talks a great deal, knows a great deal. So knowledge, this gradual storing up in the cupboard of your mind, becomes your security. Is it not so? So, the mind accumulates because it wants to feel safe.

के लिए ही करते हैं न? ज़रूरत के अलावा, जिसमें सुविधा भी शामिल है, आपको साथ ही साथ एक शान का भी एहसास होता है कि आपके पास बहुत से कपड़े हैं--यह एहसास कि आपके पास अलमारी भर कर कपड़े हैं, आप इस भावना का मज़ा लेते हैं जिससे आपको सुखी होने की, सुरक्षित होने की तसल्ली होती है। पहले आवश्यकता होती है जो कि सुविधा भी है, सुविधा ही आगे चलकर दम्भ का कारण बन जाती है और उसके साथ ही कपड़ों से भरी अलमारी आपमें 'मेरे पास कुछ है, मैं कुछ खास हूं' ऐसा भाव जगाती है। अलमारी आपकी सुरक्षा बन जाती है। इस प्रकार से मन ज्ञान, जानकारी हासिल करता है, बहुत अध्ययन करता है, बहुत बोलता है, बहुत जानने लगता है। जानकारियां, जो कि आपके मन की अलमारी में धीरे-धीरे इकट्ठी होती जाने वाली चीज़ें हैं, आपकी सुरक्षा का साधन बन जाती हैं। क्या ऐसा ही नहीं होता? अतः मन सुरक्षा की चाहत में संग्रह करता है।

Don't you feel very proud that you know lots of things? You know history, science, mathematics. You know how to drive a car. Does not the capacity to do something give you security and satisfaction? That is why the mind accumulates. When you cultivate the virtue of being good or kind or loving or generous, the cultivation is the process of accumulation, and in that accumulation which you call virtue, you feel very secure. Your mind is all the time gathering in order to be secure, to be safe. It has various cupboards. It has always a cupboard in which it can feel completely safe. But such a mind is an imitative mind, an uncreative mind. If you watch the mind in operation and understand the process of accumulation, then your mind will cease to collect. You will have memory because it is necessary. But you will not use it to feel secure, to feel that you are somebody.

क्या आपको इसका गर्व नहीं होता कि आप बहुत सी बातें जानते हैं? आप इतिहास, विज्ञान और गणित जानते हैं। आप यह जानते हैं कि कार किस तरह से चलाई जाती है। कुछ कर सकने की क्षमता क्या आपको सुरक्षा और संतुष्टि नहीं देती? यही वजह है कि मन संचय करता है। जब आप अपने भीतर भले होने का या दयालु होने का, प्रेमपूर्ण होने का अथवा उदार हृदय होने का सद्‌गुण विकसित करते हैं तो विकसित करने की यह प्रक्रिया संचय करने की ही एक प्रक्रिया होती है। इस प्रकार के संचय के द्वारा जिसे आप सद्‌गुण कहते हैं--आप बहुत सुरक्षित महसूस करते हैं। सुरक्षा पाने के लिए, सुरक्षित होने के लिए आपका मन सारे समय एकत्र करने के कार्य में लगा रहता है। इसके भीतर बहुत सी अलमारियां होती हैं। इसके पास सदैव एक-न-एक ऐसी अलमारी होती है जिसमें यह पूर्ण रूप से सुरक्षित महसूस कर सके। परंतु ऐसा मन अनुकरणशील होता है--सृजनशून्य मन होता है। यदि आप मन को कार्य करता हुआ देखें और संचय की प्रक्रिया को समझें तो आपका मन संचय करना बंद कर देता है। आपके पास स्मृति तो रहेगी क्योंकि उसका होना ज़रूरी है। किंतु उसका उपयोग आप सुरक्षित अनुभव करने के लिए या

यह महसूस करने के लिए कि आप कुछ कुछ हैं नहीं करेंगे।

There are memories which are necessary. It is stupid to say, 'I have built bridges for 35 years, and now, I must forget how to build a bridge.' I am talking of the process of accumulation of the mind from which tradition, the background, is built, from which thought arises. Such thought is never free. It is only when the mind has no accumulation, and there is no thinking from accumulation, that it can be creative.

कुछ स्मृतियों का बना रहना तो आवश्यक होता है। 'मैं ३५ वर्षों से पुल बनाने का कार्य कर रहा हूं और अब मुझे यह सब भूल जाना चाहिए'--ऐसा कहना तो मूर्खता ही है। मैं तो मन के द्वारा संचय करने की उस प्रक्रिया की बात कर रहा हूं जिससे परंपरा, परिपाटी रूपी पृष्ठभूमि निर्मित होती है और जिसमें से विचार की उत्पत्ति होती है। जब मन संचित करना और संचय को आधार बनाकर विचार करना बंद कर देता है, तभी यह सृजनशील हो सकता है।

Question: Why does a man leave society and become a sannyasi?

प्रश्न : कोई व्यक्ति समाज को त्यागकर संन्यासी क्यों बन जाता है?

Krishnamurti: You know, life is complicated, and so one wants a simple life. The more cultured, the more beautiful, the more watchful, the more alert one is, the greater is one's demand for a simple life. I am not talking of the phony sannyasi who merely puts on coloured robes and has a beard but of the real sannyasi who sees the complexity of life and puts it aside. Unfortunately, most sannyasis begin at the wrong end. Simplicity is at the other end. The two ends must meet, but you cannot begin from the outer. The feeling of simplicity arises, comes into being, when the mind is free of accumulation.

कृष्णमूर्ति : आप जानते हैं कि जीवन जटिल है इसलिए आपमें सरल जीवन जीने की चाहना होती है। जो मनुष्य जितना अधिक सुसंस्कृत, सौंदर्यपूर्ण, ध्यानपूर्ण और सजग होगा सरल जीवन जीने की उतनी ही उत्कट चाह उसमें होगी। मैं उस नकली संन्यासी की बात नहीं कर रहा हूं जो कपड़े रंगवा लेता है और दाढ़ी बढ़ा लेता है, मैं उस सच्चे संन्यासी की बात कर रहा हूं जो जीवन की जटिलता को देखता है और उसे त्याग देता है। दुर्भाग्य से अधिकांश संन्यासी इसे गलत सिरे से आरम्भ करते हैं। सरलता दूसरे सिरे पर होती है। वास्तव में दोनों सिरे मिल जाने चाहिए परंतु आप इसे बाहरी तल से शुरू नहीं कर सकते। सरलता की भावना हृदय में तब आती है, जब मन संचय नहीं करता।

Generally, a sannyasi who leaves the world says, 'The world is too stupid, too complicated; there are too many things to worry about, the family, the children, and the jobs that they will get or will not get, and so on.' So, he says, 'I won't have anything to do with all this,' and he withdraws from the so called worldly life. He puts on a saffron cloth and says, 'I have renounced the world.' But he is still

संसार को त्यागने वाला संन्यासी प्रायः यही कहता है : संसार व्यर्थ है, बहुत जटिल है, यहां बहुत सारी चीज़ों की चिंताएं करनी पड़ती हैं, परिवार की, बच्चों की, नौकरी मिलेगी या नहीं इस सबकी। इसलिए वह कहता है, 'इस सबसे मेरा कोई वास्ता नहीं है।' और इस तरह से वह तथाकथित सांसारिक जीवन से दूर हो जाता है। वह गेरुआ वस्त्र धारण कर लेता है और कहता है, 'मैंने संसार को त्याग दिया है'। परंतु फिर भी वह एक साधारण सा मनुष्य होता है और उसमें वे

a human being with all his sexual and other appetites, with all his prejudices, with all his illusions. So, his mere renouncing of the world is nothing.

सारी इच्छाएं, काम-वासनाएं एवं अन्य आवेग होते हैं, वे सारे पूर्वाग्रह और संशय होते हैं जो किसी भी सामान्य मनुष्य में पाए जाते हैं। अतः उसके संसार त्याग का कुछ अर्थ नहीं होता।

How easily we are deceived! We think we leave the 'worldly life' by merely putting on a saffron cloth, which is the easiest thing to do. But simplicity comes only in understanding the complex process of desire, of belief, of pain, of sorrow, of envy, of accumulation. One may have much of worldly possessions or little; one may have children or no children. Simplicity does not lie in possessing little. The understanding of inward beauty brings simplicity, inward richness. And without that inward richness, the mere giving up of some possessions or putting on of a yellow robe means nothing.

हम कितनी आसानी से भ्रमित हो जाते हैं! हम सोचते हैं कि गेरुए कपड़े पहनने भर से हम सांसारिक जीवन से बाहर हो गए जबकि गेरुए कपड़े पहनना तो सबसे आसान है। किंतु सरलता की समझ तो तब पैदा होती है जब इच्छा के, विश्वास के, पीड़ा के, दुख के और ईर्ष्या के संचय की क्लिष्ट प्रक्रिया को समझा जाता है। किसी मनुष्य के पास हो सकता है कि बहुत सी सांसारिक वस्तुएं हों या ऐसी थोड़ी सी ही चीज़ें हों, किसी के यहां बच्चे हों या नहीं हों। पास में कुछ न होना सरलता का सूचक नहीं है। अपनी आंतरिक समृद्धि को, आंतरिक सौंदर्य को समझने पर ही सरलता आती है। और यदि पास में वह आंतरिक समृद्धि ही न हो तो कुछ बाहरी चीज़ों को त्याग देना या पीले वस्त्र ओढ़ लेना निरर्थक है।

Do not be deceived by saffron or yellow robes. Do not worship the mere outward show of renunciation, which has no meaning. What has meaning can never be had, can never be learned, from another. You can find it yourself when you are really simple—when you have not the ashes of outward renunciation but the inward freedom from all conflicts, suppressions, ambitions, imitations. Such a person is really a creative human being who will really help the world—not a sannyasi who sits, caught in his own dreams, on the bank of a river.

गेरुए या पीले वस्त्रों से भ्रमित न हों। त्याग के बाहरी दिखावे की पूजा न करें, जो कि बिलकुल अर्थहीन होता है। जो वास्तव में अर्थपूर्ण है उसे दूसरे से पाया या सीखा नहीं जा सकता। जब आप सचमुच सरल होते हैं तो इस अर्थवत्ता को अपने ही भीतर पा सकते हैं--जब आप दिखावटी त्याग रूपी भस्म नहीं रमाते बल्कि जब सारे अंर्तद्वंद्वों से, दमन की तमाम प्रवृत्तियों से, महत्त्वाकांक्षाओं और छल-कपट आदि से आंतरिक रूप से मुक्त होते हैं। ऐसा व्यक्ति वस्तुतः एक सृजनशील मनुष्य होता है जो सच्चे अर्थों में संसार की सहायता करता है, न कि वह संन्यासी जो अपने ही स्वप्नों में तल्लीन नदी के तट पर बैठा होता है।

January 14, 1954

१४ जनवरी, १९५४